(ब) बाह्य एवं आन्तरिक संबंध (External And Internal Relations):—

मूर ने इस लेख को 'संबंध' के लिए ब्रेडले द्वारा प्रस्तुत की गयी उन युक्तियों से प्रारंभ किया है जिससे यह प्रमाणित होता है कि संबंध आन्तरिक है। वे ब्रेडले की 'आभास एवं सत्' के अनुक्रमणिका में की गई घोषणा का उल्लेख करते हुए लिखते हैं कि 'ब्रेडले ने सभी संबंधों को आन्तरिक स्वीकार किया है। इस स्वीकारोक्ति से ब्रेडले का क्या तात्पर्य था यह उनके द्वारा प्रयोग किये गये वाक्यांशों से स्पष्ट होता है। 'संबंध' दोनों छोरों को एवं पदों को प्रभावित करते हैं, प्रत्येक संबंध सारभूत रूप से अपने पदों में प्रवेश करते हैं। इस अर्थ में उन्हें आन्तरिक कहा जा सकता है।* मूर कहते हैं कि अन्य प्रत्ययवादी दार्शनिकों ने भी ब्रेडले की भाँति संबंध को आन्तरिक स्वीकार किया है। इसे वे इस वाक्यांश "कोई भी संबंध विशुद्ध रूप से बाह्य नहीं है" से अभिव्यक्त करते हैं। 'All relations qualify or modify or make a difference to the terms between which they hold". सभी संबंध जिन दो पदों के बीच रहते हैं वे अपने पदों को विशेषित या रूपान्तरित या भिन्न बनाते हैं। कोई भी दो पद जिनके बीच संबंध है वे स्वतंत्र नहीं होते हैं। मूर कहते हैं कि यह निर्धारित करना कि इन कथनों को स्वीकार कर दार्शनिक क्या प्रमाणित करना चाहते हैं, आसान नहीं है। इसे प्रारंभ करने के लिए संबंध के लिए प्रयुक्त दो प्रतिज्ञप्तियों को लेना होगा जो मूर के अनुसार भ्रान्त दिखाई देते हैं क्योंकि वे पूरे अर्थ को स्पष्ट नहीं कर पाते हैं।

पहली प्रतिज्ञप्ति जो कुछ निश्चित भी है एवं स्पष्ट रूप से प्रत्येक संबंध में बिना किसी अपवाद के सत्य भी है, वह है किसी भी संबंध के उदाहरण में, जो

---

* "A relation must at both ends affect, and pass into, the being of its terms" p. 364) "Every relation essentially penetrates the being of its terms, and is, in this sense intrinsical" (p. 392). To stand in a relation and not to be relative, to support it and yet not to be infected and undermined by it, seems out of the question" (p. 142) Moore, G.E. Philosophical Studies. p. 271.

Scanned with CamScanner

तथ्य अभिव्यक्त किया जाता है यह कहकर कि प्रदत्त पद 'अ' का एक और पद 'ब' से संबंध है, या युग्म पद 'ब' एवं 'स' से संबंध है, या त्रिपदीय 'ब', 'स' एवं 'द' के बीच हैं, इनमें यह नहीं कहा जाता है कि वे केवल एक दूसरे से इसलिए संबंधित हैं क्योंकि वे सब इकट्ठे हैं अपितु इसलिए संबंधित हैं कि उनमें एक क्रम या व्यवस्था है। एक तथ्य जिसे हम इस प्रकार से अभिव्यक्त करते हैं कि एडवर्ड VII जॉर्ज V के पिता थे, स्पष्ट रूप से इस कथन में केवल एडवर्ड, जॉर्ज एवं पिता का संबंध ही नहीं है क्योंकि इसे जार्ज, एडवर्ड एवं पितृत्व का संबंध ऐसा नहीं रखा जा सकता है, यह अनिवार्य है कि यह संबंध को एडवर्ड एवं जार्ज को इस प्रकार से संबंधित करना है कि यह इसे अभिव्यक्त करे कि एडवर्ड, जार्ज का पिता था न कि जार्ज एडवर्ड का पिता था। मूर कहते हैं कि यह प्रतिज्ञप्ति जिसमें संबंध के लिए उसके क्रम या व्यवस्था (order) को अनिवार्य माना जाता है बिना किसी अपवाद के सभी संबंधों में सत्य है।

दूसरी प्रतिज्ञप्ति जिसे मूर ने लिया, उनका कहना है कि निश्चित रूप से यह भी पूर्ण अर्थ को स्पष्ट नहीं करती है, परन्तु संबंध को स्पष्ट करते हुए जिस वाक्यांशों का प्रयोग किया जाता है यदि उन्हें लिया जाए तो सभी संबंध अपने पदों को रूपान्तरित या प्रभावित करते हैं या "सभी संबंध अपने पदों में भिन्नता लाता है" "All relations modify or affect their terms" or All relations make a difference to their terms". मूर कहते हैं कि इसमें जो स्वाभाविक एवं बोधगम्य अर्थ है वह यह कि यदि, लाख की छड़ी को आग में रखा जाए, तो लाख पिघल जाती है, आग से इसका संबंध होने पर इसका रूपान्तरण हो जाता है। यह (Modify) रूपान्तरण का अर्थ है। यदि संबंध के उदाहरणों में इस प्रकार का रूपान्तरण होता है तो यह मानना पड़ेगा कि उनका जिसके बीच संबंध बताया गया है परिवर्तन हो जाता है। मूर कहते हैं कि इस प्रकार की मान्यता गलत है क्योंकि ऐसे भी पद हैं जिनके बीच संबंध है परन्तु उनमें किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता है। वे दार्शनिक जो यह स्वीकार करते हैं कि सभी संबंध आन्तरिक होते हैं वे यह जानते हुए कि कुछ स्थितियों में संबंध अपने पदों को रूपान्तरित नहीं करते हैं बिना किसी अपवाद के यह स्वीकार करते हैं कि समस्त संबंध आन्तरिक होते हैं तो मूर कहते हैं कि ऐसा लगता है कि उन्होंने इस वाक्यांश का प्रयोग रूपक (Metaphor) के अर्थ में किया है। सभी संबंध अपने पदों को रूपान्तरित करते हैं, यह सभी संबंध आन्तरिक है का समानार्थी स्वीकार किया गया है। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि (modify) रूपान्तरण को रूपक के अर्थ में लिया गया है। अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि यह रूपक अर्थ क्या है? मूर कहते हैं कि यह स्पष्ट है

Scanned with CamScanner

कि कुछ संबंधों के उदाहरणों में प्रदत्त पद अ का संबंध केवल एक अन्य पद से रहता है ऐसा नहीं अपितु कई भिन्न पदों से रहता है। यदि उदाहरण के लिए हम पितृत्व के संबंध को लेते हैं तो यह स्पष्ट है कि कोई व्यक्ति एक पुत्र का पिता हो सकता है एवं कई भिन्न सन्तानों का पिता भी हो सकता है। उदाहरण के लिए अ तीन बच्चों का पिता है जो क्रमशः ब, स एवं द हैं, आन्तरिक संबंध को स्वीकार करने वाले यह स्वीकार करेंगे कि अ में रूपान्तरण हुआ न केवल इसलिए कि वह पिता है अपितु ब का पिता है, स का भी पिता है एवं द का भी पिता है। सभी संबंध अपने पदों को रूपान्तरित करते हैं यद्यपि इस उदाहरण के संबंध में मूर कहते हैं कि वे अपने अर्थ को स्पष्ट नहीं कर पाते हैं फिर भी इससे जो अर्थ निकाला जा सकता है वह यह कि सभी संबंधीय गुण अपने पदों को रूपान्तरित करते हैं। (All relational properties modify their terms) संबंधीय गुण को जिस अर्थ में समझा गया है उसे स्पष्ट करते हुए मूर कहते हैं किं यदि अ, ब का पिता है इसमें जब यह स्वीकार किया जाता है कि वह पिता है यह संबंधीय गुण है, यह गुण अपने आप में संबंध नहीं है। यदि स, ब से भिन्न सन्तान है तो स के पिता होने के गुण से ब के पिता होने का संबंधीय गुण पृथक होगा यद्यपि वहाँ एक ही संबंध पिता होने का है जो दोनों से निगमित होता है। इससे मूर को एक अर्थ प्राप्त होता है एवं वे कहते हैं कि वे दार्शनिक जो संबंध को आन्तरिक मानते हैं वे प्रायः 'संबंध' का अर्थ 'संबंधीय गुण' से लेते हैं, जब वे कहते हैं कि प्रदत्त पदों के सभी 'संबंध' तो इसका तात्पर्य संबंधीय गुणों से है। मूर कहते हैं कि इसके लिए दो भिन्न शब्दों का प्रयोग होना चाहिए। दो भिन्न पदों के लिए प्रयुक्त होता है, 'संबंध' जिसका तात्पर्य है 'पितृत्व' एक संबंध है एवं ब का पिता एक संबंधीय गुण है।

मूर कहते हैं कि रूपांतरण के रूपक का अर्थ क्या है? जिसके अन्तर्गत सभी संबंध आंतरिक होते हैं को सभी संबंधीय गुण जिन दो पदों के बीच रहता है वह रूपांतरित करता है कि उन्हें समानार्थी माना गया है? रूपान्तरण को एक सादृश्य analogy के रूप में लिया गया है जो संबंध एवं परिवर्तन के कारण के बीच है। अब यह देखना है कि इस प्रतिज्ञप्ति में अ एवं कोई भी संबंधीय गुण जो उसमें है उसके बीच किस प्रकार दिखाई देता है।*

---

* I think it is clear that the term "Modify" would never have been used at all to express the relation meant, unless there had been some analogy between this relation and that which we have seen is the proper sense of "Modify", namely causes to change. And I think we can see where the analogy comes in by considering the statement, with regard to any particular terms A and any relational property P which belongs to it,...."Ibid p.p. 282-3.

Scanned with CamScanner

यदि प नहीं रहा होता तो अ जो कुछ भी वह है उससे भिन्न होताः A would have been different from what it is, if it had not had P: यह कथन उदाहरण के लिए कि एडवर्ड VII भिन्न कुछ और होता यदि वह जार्ज V का पिता न होता तो। (Edward VII would have been different- if he had not been father of George V.)

यहाँ पर इसे स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि अ एवं प, कुछ अर्थों में जब भी यह प के लिए सत्य होगा कि इसने अ को रूपान्तरित किया उस अर्थ में: जैसे आग कारण है लाख की छड़ी को गलाने के लिए, तो हम सत्य रूप से कह सकते हैं कि लाख की छड़ नहीं पिघल सकती थी, यदि उसे आग में न रखा जाता तो ऐसा लगता है कि यह अ एवं प में भी सत्य होगा। जबकि यह इस उदाहरण में सत्य नहीं है कि प ने अ को परिवर्तित किया। मूर इसे व्याघाती एवं दुर्बल युक्ति स्वीकार करते हैं। मान लिया जाए कि अ के पास प है तब कोई भी जिसके पास प नहीं है वह अनिवार्यतः अ से भिन्न होगा। यह वह प्रतिज्ञप्ति है जिसे प अ को रूपान्तरित करता है, के लिए रूपक के रूप में प्रयुक्त किया गया है। (A has P, then anything which had not had P would necessarily have been different from A) मूर इस प्रतिज्ञप्ति की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए इसमें दो वाक्यांशों को अलग-अलग रूप से लेते हैं एवं कहते हैं कि इसकी व्याख्या करना आवश्यक है। प्रथम वाक्यांश है 'अनिवार्यतः होता' (Would neccessarily have been) इसके अर्थ को प्राथमिक रूप से इस प्रकार कहा जा सकता है यह युग्म गुण, प एवं फ कोई भी पद जिसके पास प था वह अनिवार्यतः फ भी था यह फ या प फ को प्रतिपन्न करता है के समानार्थी है। प्रतिपन्न (follows) का तात्पर्य है जैसे समकोण त्रिभुज से त्रिभुज एवं लाल से रंग को निगमित किया जाता है।

दूसरा वाक्यांश है अ से भिन्न (different from A)। जब यह कहा जाता है कि अ, ब से भिन्न है तो इसके दो भिन्न अर्थ हो सकते हैं। इसका यह अर्थ हो सकता है कि अ, ब से संख्यात्मक रूप (Numerically) से भिन्न है, ब से अन्य कुछ है, ब से तादात्म्य संबंध नहीं है। या इसका अर्थ यह हो सकता है केवल यही स्थिति नहीं है अपितु अ, ब से कुछ इस प्रकार संबंधित है कि जिसे मोटे तौर पर कहा जा सकता है अ, ब से गुणात्मक रूप से भिन्न है। मूर कहते हैं कि वे

Scanned with CamScanner

दार्शनिक जो यह स्वीकार करते हैं कि "सभी संबंध अपने पदों में भिन्नता लाते हैं" वे भिन्नता का तात्पर्य गुणात्मक भिन्नता से लेते हैं संख्यात्मक भिन्नता से नहीं।*

यदि प कोई संबंधीय गुण है जो अ में है, तब प की अनुपस्थिति अ से न केवल संख्यात्मक भिन्नता को प्रतिपन्न करता है अपितु गुणात्मक भिन्नता को बताना है। परन्तु स्थिति यह है कि कोई वस्तु अ से गुणात्मक रूप से भिन्न है इस प्रतिज्ञप्ति से यह निगमित होता है कि उनमें संख्यात्मक भिन्नता भी है। तब यह कहना कि प्रत्येक संबंधीय गुण 'आन्तरिक' है इसमें एक ही समय में भिन्नता के दोनों अर्थों को मानना पड़ेगा। मूर कहते हैं कि आन्तरिक संबंध को मानने वाले यह स्वीकार कर रहे हैं कि यदि प एक संबंधीय गुण है जो अ में है, तब प अ का आन्तरिक हुआ इन दोनों अर्थों में (1) प की अनुपस्थिति अ से गुणात्मक भिन्नता को अनिवार्यतः लाएगा एवं (2) प की अनुपस्थिति अ से संख्यात्मक भिन्नता को लाएगा।**

मूर कहते हैं कि इनमें से कोई भी प्रतिज्ञप्ति सत्य नहीं है। यदि प्रथम अर्थ को लिया जाए तो हम देखते हैं कि कोई भी दो जिनमें गुणात्मक भिन्नता है वे हमेशा एक दूसरे से गुणात्मक रूप से भिन्न रहेंगे, उदाहरण के लिए ऐसा नहीं है कि कोई वस्तु जो विशुद्ध रूप से लाल है वह गुणात्मक रूप से उससे भिन्न है जो विशुद्ध रूप से नीला है, अपितु गुण 'शुद्ध लाल' अपने आपमें गुणात्मक रूप से गुण 'शुद्ध नीले' से भिन्न है। यदि पहले अर्थ में संबंधीय गुण को लिया जाए जिसे आन्तरिक माना जाता है तो एक उदाहरण प्रस्तुत किया जा सकता है 'नारंगी'

---

* The first is the pharse "would necessarily have been." And the meaning of this can be explained, in a preliminary way, as follows :- To say of a pair of properties P and Q, that any term which had had P would necessarily have had Q, is equivalent to saying that, in every case, from the proposition with regard to any given term that it has P, it follows that that term has Q:......To complete the definition it is necessary, however, to define the sense in which "different from A" is to be understood. There are two different senses which the statement that A is different from B may bear..... A is **numerically** different from B, ...A is **qualitatively** different from B." Ibid. p.p. 284-5.

** They are maintaining that, if P be a relational property which belongs A then P is internal to A both in the sense (1) that the absence of P entails qualitative difference from A: and (2) that the absence of P entails numerical difference from A. Ibix P. 286.

Scanned with CamScanner

यह एक गुण है जो पीला गुण एवं लाल गुण के बीच का गुण है यह संबंधीय गुण है एवं आन्तरिक है। कोई भी गुण जो पीले एवं लाल के बीच का नहीं है अनिवार्यतः नारंगी नहीं है, यह नारंगी से भिन्न जो भी है उसका नारंगी से गुणात्मक भिन्नता है। इससे यह प्रमाणित होता है कि पीले एवं लाल के मध्य का जो भी है वह नारंगी में 'आन्तरिक' रूप से है।

मूर कहते हैं कि जो भी इस प्रथम अर्थ में आन्तरिक होगा द्वितीय अर्थ में भी आन्तरिक होगा एवं इस प्रकार की मान्यता गलत एवं निराधार है। मूर के अनुसार कुछ संबंध ऐसे हैं जो विशुद्ध रूप से बाह्य है। उनके अनुसार वास्तव में जो भ्रम हो रहा है वह 'अनिवार्य है' 'is necessarily' का 'अनिवार्य होगा' 'would necessarily be' के साथ हो रहा है। संबंध बाह्य है इसको सिद्ध करने के लिए यह मानना पड़ेगा कि यद्यपि एडवर्ड VII वास्तव में जार्ज V के पिता थे, वह जार्ज के पिता न होने पर भी अस्तित्वन रहते। परन्तु इसे मानने के लिए यह भी मानना होगा कि यह सत्य नहीं है एक व्यक्ति जो जार्ज का पिता नहीं है वह अनिवार्य रूप से एडवर्ड से अन्य होगा।

मूल्याँकन :—

मूर द्वारा प्रस्तुत बाह्य एवं आन्तरिक संबंध लेख में खण्डनात्मक एवं मण्डनात्मक दो पक्ष परिलक्षित होते हैं। स्पष्ट है कि जहाँ उन्होंने एक ओर प्रत्ययवादियों द्वारा प्रतिपादित आन्तरिक संबंध को अस्वीकार किया है वहीं वस्तुवाद की स्थापना के लिए संबंधों को बाह्य स्वीकार किया है। मूर ने प्रमाणित किया है कि कुछ संबंध विशुद्ध रूप से बाह्य होते हैं। तार्किक रूप से यदि एक भी संबंध बाह्य प्रमाणित हो जाता है तो सभी संबंध आन्तरिक होते हैं यह असत्य हो जाता है। इस लेख को मूर ने अन्त में तार्किक प्रतीकों की सहायता से भी स्पष्ट किया है। आन्तरिक संबंधों को अस्वीकार करते हुए उन्होंने इसके विभिन्न पक्षों को वाक्यांशों को एवं उसके विभिन्न अर्थों को विस्तृत रूप से लिया है। परन्तु संबंध बाह्य है इसे प्रमाणित करने के लिए केवल यही बताया है कि इसे किस प्रकार ग्रहण करना पड़ेगा। एक ओर जहाँ सम्पूर्ण लेख उनके सूक्ष्म भाषा विश्लेषण की क्षमता को दर्शाता है वहीं ऐसा लगता है कि यदि इसे और भी तार्किक रूप से

* The quality 'orange' is intermediate in shade between the qualities yellow and red ... which were **not** intermediate between yellow and red. would necessarily be other than orange: That is to say the absence of the relational property "intermediate between yellow and red", entails the property "different in quality from orange." Ibid. p.p. 286-7.

प्रस्तुत किया गया होता तो वे निश्चित रूप से अति विस्तृत व्याख्या दोष से बच सकते थे। एक प्रश्न यह उपस्थित होता है 'सभी संबंध आन्तरिक होते हैं' इस दावे के विरुद्ध मूर ने यह क्यों नहीं प्रमाणित किया कि कुछ संबंध आन्तरिक नहीं होते हैं। यदि उनके द्वारा प्रयुक्त वाक्यांश का कुछ संबंध विशुद्ध रूप से बाह्य होते हैं का यह अर्थ लिया जाये कि कुछ संबंध आन्तरिक नहीं होते तो कदाचित इसे बहुत संक्षेप में प्रमाणित किया जा सकता था। मूर ने इस लेख में दावा अवश्य किया है कि सहज ज्ञान के आधार पर ही वे संबंध को बाह्य स्वीकार कर रहे हैं परन्तु वस्तुस्थिति उससे भिन्न है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. The Encyclopedia of Philosophy Vol. 5. The Macmillan Com.
2. A Defence of Common Sense, G.E. Moore.
3. The Chief Currents of Contemporary Philosophy - D.M. Dutta Calcutta University, Press 1972.
4. Philosophical Studies - G.E. Moore Routledge and Kegan Paul, London.

Scanned with CamScanner